Bozd S.L

कक्षा : 11-12

हिन्दी (द्वितीय भाषा) (009)

अभ्यासक्रम संरचना

भूमिका :

भाषा मनुष्य के विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। उच्चतर स्तर पर विद्यार्थी में ज्ञानार्जन और अभिव्यक्ति के विकास में भाषा की विशिष्ट भूमिका होती है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के लिए इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति हेतु भाषा और साहित्य का एक समंकित आधार पाठ्यक्रम वांछनीय है। जिससे विद्यार्थी विशिष्ट विषयों के अध्ययन की दिशा में अग्रसर हो सकें।

जीवन के विविध संदर्भों में व्यवहार द्वारा और व्यवहार के लिए भाषा सीखना, भाषा शिक्षा कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। व्यावहारिक हिन्दी की संकल्पना इस नई दृष्टि का परिचायक है। इस आधार पर पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है। जीवन में भाषा के सही उपयोग और प्रयोग की क्षमता का विकास करना।

पाठ्यक्रम को वर्तमान सरोकारों के अनुरूप करना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य होता है। इस संदर्भ में राष्ट्रीय पात्यक्रम 2005 के संदर्भ में भी वर्तमान पाठ्यक्रम का नवीनीकरण होना चाहिए। प्रस्तुत पाठ्यक्रम नवीनीकरण के कार्यक्रम का मूलाधार 2005 के राष्ट्रीय पाठ्यक्रम का प्रारूप है। इस संदर्भ में कक्षा 11-12वीं के पाठ्यक्रम के प्रमुख तत्त्व तथा पाठ्यसामग्री के चयन में निम्नांकित घटकों को दृष्टि में रखना होगा। ये घटक इस प्रकार है :

* **निम्नलिखित घटकों को लक्ष्य में रखकर पाठ्यसामग्री का चयन किया जाय :**

- जीवनमूल्य (प्रामाणिकता, सहकारिता, करुणा, नेतृत्व तथा देशभक्ति) तथा जीवन कौशल्य (पर्यावरण व्यवस्थापन, समय व्यवस्थापन वित्त व्यवस्थापन, मानसिक तनाव, वाक् कौशल)
- स्वच्छता और स्वास्थ्य
- आपदा व्यवस्थापन
- सामाजिक समरसता
- पर्यावरण संवर्धन एवं संरक्षण
- राष्ट्र की भावात्मक एकता एवं अखंडितता
- उपभोक्ता सुरक्षा
- शिशु अधिकार
- वैज्ञानिक रुझान
- स्त्री-पुरुष समानता
- स्वातंत्र्य संग्राम की जानकारी
- उत्तम नागरिक का निर्माण
- लोकतांत्रिक मूल्य
- सृजनात्मकता का विकास

इन घटकों का यथायोग्य समावेश पाठ्यसामग्री में करते हुए व्याहारिक हिन्दी का 60 प्रतिशत अंश तथा साहित्य का 40 प्रतिशत अंश संपादित करना होगा।

सामान्य उद्देश्य :

- विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा की संरचना और विभिन्न व्यवहार क्षेत्रों में प्रयुक्त भाषा-रूपों की जानकारी देना, जिससे वे विभिन्न सामाजिक संदर्भों में उनका व्यवहार कर सकें ।
- विद्यार्थियों में विभिन्न संबंधित मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास करना, जिससे वे भाषिक संप्रेषण में दक्षता प्राप्त कर सकें ।
- साहित्य के पठन और रसास्वादन की क्षमता विकसित करना ।
- विद्यार्थियों को भाषा के माध्यम से भारतीय संस्कृ ति तथा ज्ञान-विज्ञान संबंधी विभिन्न क्षेत्रों की भाषिक अभिव्यक्ति से परिचित कराना जिससे उनके चिंतन का धरातल विस्तृत हो सके ।
- भारतीय संस्कृति और सभ्यता के प्रति अपेक्षित सम्मान और गौरव की भावना विकसित करना ।
- मानवीय जीवन मूल्यों, नागरिकों के मूल कर्तव्यों, मानवाधिकारों, समाज के प्रति हमारे दायित्वों और पर्यावरण के प्रति जागरुकता पैदा करना ।

विशिष्ट उद्देश्य :

- विभिन्न सामाजिक संदर्भों में प्रभावी संप्रेषण के लिए उपयुक्त शब्दावली, भाषा-रूपों, अभिव्यक्तियों, शैली-रूपों आदि का ज्ञान देना तथा उनका अभ्यास कराना ।
- हिन्दी भाषा के कौशलों (विशेषकर लेखन कौशल) का विकास और अभ्यास कराना ।
- हिन्दी व्याकरण के विभिन्न व्यावहारिक और प्रयोगपरक पक्षों की विस्तृत जानकारी देना और उनका अभ्यास करना ।
- आधारभूत पारिभाषिक शब्दावली तथा विशिष्ट अभिव्यक्ति का बोध कराना और उनके समुचित प्रयोग की क्षमता विकसित कराना ।
- भावि जीवन में व्यवसायी वृत्ति (जैसे सरकारी या गैरसरकारी सेवा, उद्योग, व्यापार आदि) की दृष्टि से कम्प्यूटर जैसे आधुनिक साधनों के उपयोग के साथ शिक्षार्थी को विद्यालय स्तर पर ही अधिक से अधिक जीवनोपयोगी संदर्भों में प्रयुक्त भाषा का व्यावहारिक ज्ञान देना ।
- विद्यार्थी उच्चशिक्षा के क्षेत्र में ज्ञान-विज्ञान से संबंधित विषयों का अध्ययन हिन्दी माध्यम से कर सकें, इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उनके भाषा-ज्ञान को समृद्ध कराना ।
- विशिष्ट मौखिक कौशलों के साथ उच्चारण संबंधी अनेक विशेषताओं जैसे-सुर-बलाघात तथा अनुतान आदि पर विशेष बल देना ।
- हिन्दी साहित्य की प्रमुख विधाओं का परिचय कराना, जिससे विद्यार्थी उन विधाओं के रचनामूलक स्वरूप को तथा कथ्य के माध्यम से रचनाकार के संदेश को समझ सकें और उसका आस्वादन कर सकें ।

* इस पाठ्यक्रम के लिए सेमेस्टर प्रणाली प्रस्तावित है । यह पाठ्यक्रम चार सेमेस्टरों में विभाजित किया जायेगा ।

* पहला और दूसरा सेमेस्टर कक्षा-11 और तीसरा तथा चौथा सेमेस्टर कक्षा - 12 के लिये निर्धारित है ।

पाठ्यसामग्री :

पाठ्यक्रम के आधार पर निम्नलिखित पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया जाएगा :

कक्षा-11

(1) गद्य-पद्य-व्याकरण सहित एक पुस्तक

कक्षा-12

(2) गद्य-पद्य-व्याकरण सहित एक पाठ्यपुस्तक

इन पाठ्यपुस्तकों के गद्य पाठों में साहित्य की विभिन्न विधाओं का समावेश होगा। पद्य रचनाओं के चयन में प्राचीन-अर्वाचीन कवियों की मौलिक रचनाएँ या अनुदित रचनाओं को स्थान दिया जाएगा, ताकि उत्तर पुस्तिका के हिन्दी भारतीय स्वरूप का परिचय हो। प्रत्येक पाठ के अंत में प्रश्न अभ्यास, स्वाध्याय, शिक्षक-विद्यार्थी प्रवृत्तियाँ होगी।

व्यावहारिक हिन्दी एवं व्याकरण की पुस्तक में भाषा के प्रयोजनमूलक, व्यावहारिक पक्षों तथा व्याकरणिक विषयों पर पाठ होंगे। पाठ के अन्त में प्रश्न एवं अभ्यास होंगे।

पाठ्यबिन्दु :

- प्रयोजनमूलक / व्यावहारिक हिन्दी का स्वरूप और क्षेत्र।
- कार्यालयी पत्राचार, प्रारूपण एवं टिप्पण, लेखन प्रारंभिक स्तर पर परिचय और अभ्यास।
- विभिन्न विभागों से संबंधित समस्याओं (पानी, बिजली, टेलिफोन, परिवहन... इत्यादि) के बारे में विभागीय अधिकारियों को पत्र या शिकायत लिखना, स्ववृत्त तैयार करना।
- किसी समारोह संबंधित विवरण सहित निमंत्रण पत्र लिखना।
- बैंक के साथ पत्राचार की व्यावहारिक जानकारी देना।
- डाकघर संबंधित उपयोगी प्रपत्र भरना।
- वार्षिक समारोह, खेलकू द (सचित्र) प्रदूषण आदि विषयों पर फीचर तैयार करना।
- साहित्य विधाओं के स्वरूपों का परिवर्तन (कहानी से संवादों में रूपांतर)।
- विभिन्न विज्ञापनों के रूप (व्यावसायिक, निविदा, वैवाहिक, जनकल्याण, रोजगार आदि) की जानकारी देना।
- कम्प्यूटर, डी.टी.पी., प्रौद्योगिक सूचना-ई-मेल, इन्टरनेट, वेबसाइट, फैक्स आदि) की संक्षिप्त एवं उपयोगी जानकारी देना। संचार माध्यमों से परिचित करना।
- शब्दावली, विश्वकोश, थिसोरस (प्रयोगकोश) आदि संदर्भग्रंथों का संक्षिप्त परिचय देना एवं उपयोग सिखाना।
- हिन्दी के पारिभाषिक शब्दावली की विशेषताओं का परिचय कराना।
- पुस्तकालय के महत्त्व एवं उपयोगिता से परिचित कराना एवं सूचीकरण से पुस्तकों को ढूँढ़ने तथा प्राप्त करने की विधि से परिचित कराना।
- उपभोक्ता न्यायालय में शिकायत करना तथा बैनामा, पंजीकरण, (रजिस्ट्री) आदि की भाषा से परिचित कराना।
- आधुनिक मुद्रण तकनिक का परिचय देना।
- देश के पर्यटन स्थलों के यात्रा संबंधी विवरण की प्रस्तुति सिखाना, टुरिस्ट गाइड के रूप में मौखिक अभिव्यक्ति सिखाना।

व्याकरण संबंधी पाठ्यबिन्दु

- शब्द का स्वरूप
- शब्द का वर्गीकरण
- शब्द भंडार
- शब्द निर्माण
- शब्दभेद
- वाक्य विचार
- वाक्य अशुद्धि शोधन
- विराम चिह्न

रचना खंड के अंतर्गत समसामयिक महत्त्व के कु छ निबंध तथा लोकोक्तियों एवं मुहावरों को स्थान दिया जाएगा ।

• मौखिक अभिव्यक्ति :

दैनिक जीवन के अधिकांश कार्य मौखिक अभिव्यक्ति द्वारा ही संपन्न होते हैं । पारिवारिक एवं सामाजिक स्तर पर वार्तालाप संभाषण, परस्पर बातचीत, सभा-समितियों में विचारों की अभिव्यक्ति धार्मिक और सांस्कृतिक संदर्भों में विचारों का आदान-प्रदान आदि अनेक कार्यों में मौखिक अभिव्यक्ति का प्रयोग होता है । मौखिक अभिव्यक्ति द्वारा आत्मप्रकाशन की महत्ता को ध्यान में रखते हुए सतत मूल्यांकन करना तथा उसमें उत्तीर्ण होना अनिवार्य होना चाहिए ।

• विषय क्षेत्र :

उपर्युक्त पुस्तकों में निम्नलिखित विषय क्षेत्रों से विषय सामग्री ली जाएगी :

जीवन के विविध संदर्भ :

पौराणिक एवं साहसकथाएँ, त्यौहार, खेलकूद, लोककथाएँ, पशु-पक्षी, ग्रामीण एवं शहरी जीवन, प्रकृति, पर्यावरण - संरक्षण, कृषि और प्रौद्योगिकी, यातायात के साधन, महान विभूतियाँ, मनोरंजन, विभिन्न धर्मों के मूल सिद्धांतो का परिचय एवं सर्वधर्म समभाव, देश की सांस्कृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर, प्रेम, वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना, राष्ट्रीय भावात्मक एकता, नागरिकों के मौलिक अधिकार, कर्तव्य, मानवाधिकार, जनसंख्या नियंत्रण, स्त्री-पुरुष समानता, दर्शनीय स्थल, विज्ञान, कला, पर्व, मेले, राष्ट्रीय चिह्न, राष्ट्र के प्रहरी, यात्रा वृत्तांत... आदि... ।

• शिक्षा प्रयुक्तियाँ :

2001 के राष्ट्रीय शिक्षा प्रारूप में सूचित अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया के संदर्भ में कुछ नवीन शिक्षा प्रयुक्तियों का प्रयोग भी कक्षा-कक्षा में होना चाहिए । इस पाठ्यक्रम में कतिपय शिक्षा-प्रयुक्तियाँ सूचित की जा रही हैं ।

- ऐसी शिक्षण-प्रयुक्तियों का प्रयोग करना जिन से विद्यार्थियों में जिज्ञासा पैदा करने के लिए प्रोत्साहित होने और समस्या समाधान योग्यताओं का पोषण हो ।
- शिक्षण में दृश्य-श्राव्य साधनों, जन-संचार माध्यमों तथा कम्प्यूटर सहायक सामग्री के रूपमें अधिकाधिक उपयोग करना । सिखाने-पढ़ाने के बजाय स्वयं सीखने पर अधिक बल देना ।
- कक्षा अध्यापन के पूरे कार्य के रूप में सेमिनार, ट्युटोरियल, समस्या-समाधान कार्य, समूहचर्चा, परियोजना कार्य, स्वाध्याय, नाट्यकरण, काव्यगान, काव्यपठन आदि पर विशेष बल देना ।

- 11वीं और 12वीं कक्षाओं में हिंदी व्याकरण को केवल सैद्धांतिक और औपचारिक रूप में प्रस्तुत करने के बजाय प्रकार्यात्मक रूप में प्रस्तुत करना । तद्नुसार भाषा-संरचना संबंधी जो व्याकरण-सामग्री तैयार की जाए उसमें मुख्यत: व्याकरण और संप्रेषणात्मक शिक्षण बिंदुओं पर बल दिया जाए । भाषा-प्रयोग के इन शिक्षण बिंदुओं का समुचित उदाहरणों तथा अभ्यास कार्यों के आधार पर यथावश्यक उपयुक्त अनुदेशों के साथ प्रस्तुत किया जाय ।
- विद्यार्थियों की मौखिक अभिव्यक्ति में उचित-हावभाव, सही उच्चारण और अनुतान पर बल ।

मूल्यांकन और परीक्षा :

विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक और सहसंज्ञानात्मक दोनों प्रकार की क्षमता के विकास के लिए मूल्यांकन को प्रभावी ढंग से प्रयोग में लाना अपेक्षित है । इसके लिए सतत और समग्र दोनों रूप में मूल्यांकन किया जाना वांछित है ।

सतत और व्यापक मूल्यांकन :

इसके अंतर्गत शैक्षिक विषय क्षेत्र तो रहेंगे ही, साथ ही उनमें विद्यार्थी के सार विकास की दृष्टि से निर्धारित सह शैक्षिक क्रियाकलाप शामिल होंगे उच्चतर माध्यमिक कक्षा में सहशैक्षिक क्षेत्रों में विद्यार्थियों का आकलन विद्यालय द्वारा किया जाएगा और विद्यालय इस आकलन को शैक्षिक विषयों की अंक सूचि या ग्रेड कार्ड में सम्मिलित करने के लिए बोर्ड को भेजेंगे ।

अंक विभाजन :

मूल्यांकन की दृष्टि से अध्ययन के लिए स्वीकृत शिक्षण सामग्री पर 100 अंक निर्धारित किए जाएगें, अंक विभाजन इस प्रकार किया जा सकता है :

- लिखित 80 प्रतिशत
- मौखिक 20 प्रतिशत

मौखिक परीक्षा में विद्यार्थियों के उच्चारण प्रवाहानुसार बल आदि पर ध्यान दिया जाएगा । प्रश्नोत्तर, परिचर्या, भाषण आदि में आत्मविश्वास, तत्परता, वाक्पटुता आदि तत्त्व भी देखे जाएँगे । मौखिक परीक्षा पूर्णत: आंतरिक होगी, अध्यापक सत्रीय और सतत मूल्यांकन के आधार पर अंक प्रदान करेगें ।